के. एस. के. वी. कच्छ यूनिवर्सिटी के ७वें दीक्षांत समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहलीजी का संबोधन। (दिनांक : ४ अक्टूबर, २०१७)

- आज आपकी यूनिवर्सिटी के लिये बहुत ही महत्व का दिन है। आज आपकी यूनिवर्सिटी का दीक्षांत समारोह भी है और जिनके नाम पर इस विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है उन क्रांति गुरू श्यामजी कृष्णवर्मा की जन्म जयंती भी है। हमे क्रांति गुरू श्यामजी कृष्ण वर्मा के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और उनके जीवन से यह प्रेरणा लेनी चाहिये की हमारे देश की स्वतंत्रता के लिये हमारे स्वातंत्र्य वीरों ने कितने बलिदान दिये, कितने बड़े से बड़े संकट सहे और उन पर देश का जो ऋण था उस ऋण को उतारने का प्रयत्न किया। उनसे प्रेरणा लेकर हम भी यह संकल्प करें कि समाज का जो ऋण हम पर है उस ऋण से मुक्त होने का हम प्रयास करेंगे। आपको यह सोचना चाहिये कि आप समाज को क्या दे सकते है, जिससे आप सामाजिक ऋण से मुक्त हो।
- आज आपके विश्वविद्यालय का 7वां दीक्षांत समारोह है। इस दीक्षांत समारोह में जिन भाइयों-बहनों को पदवी मिली है और जिनको स्वर्ण पदक मिले है उन सभी को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मैं देख रहा था कि स्वर्ण पदक प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियो में ज्यादा संख्या हमारी बहनों की थी। हमारे देश में नारी शक्ति बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है, इसका यह प्रमाण है। आज आपको पदवी प्राप्त हुई है और आप इस विश्वविद्यालय को छोडकर एक बड़े विश्व में प्रवेश करेंगे। अभी तक आप इस विश्वविद्यालय के परिसर में रहते थे जो एक सुरक्षित स्थल था। यहाँ पर आपकी चिंता आपके माता-पिता तो करते ही थे मगर उनके साथ-साथ आपके शिक्षक, प्राध्यापक और गुरुजन भी करते थे। यहाँ के सुरक्षित वातावरण में रहकर आपने ज्ञान अर्जित किया है। अब आप इस सुरक्षित क्षेत्र को छोड़कर एक विशाल क्षेत्र में जा रहे है जिस क्षेत्र की अपनी चुनौतियाँ है। उन चुनौतियों को आप सफलतापूर्वक कैसे सामना कर पाएंगे इसके लिये इस विश्वविद्यालयने आपको तैयार किया है। अब आपकी तैयारी

की कसौटी है। बड़े क्षेत्र में आपके सामने कई चुनौतियाँ होगी। सबसे बड़ी चुनौती तो अपने को स्थापित करने की होगी। आपको रोजगार मिले, आप कोई ऊंचा स्थान पांये, आप अपने जीवन में सेटल हो जाये और आपके माता-पिता की आपसे जो आकांक्षाएं रही है, उसको आप पूरा करें मगर इसके साथ-साथ आपको समाज और राष्ट्र की भी चिंता करनी है। आपके ऊपर समाज का जो ऋण है, उस ऋण से आपको मुक्त होना पड़ेगा। डिग्री प्राप्त करके यहाँ से जाने के बाद आप अपने देश के लिये कुछ नहीं करेंगे तो आप राष्ट्र के प्रति अपने ऋण से मुक्त नहीं होंगे।

- हमारे देश का यह सौभाग्य है कि हमारी आबादी में युवा वर्ग का हिस्सा बहुत बड़ा है। यही हमारे देश की मूड़ी है। इस मूड़ी का प्रयोग राष्ट्र के विकास के लिये होना चाहिए । आज हमारा देश विकासशील देश कहा जाता है, मगर हम पूर्णरूप से विकसित राष्ट्र की कक्षा में नहीं आये। इसके लिये हाल में जो प्रक्रिया हो रही है, उस प्रक्रिया को आपको तेज़ बनाना है।
- हमारे युवा employable होने चाहिये। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे हमारे कौशल का विकास हो। यदि युवाओं में हमारे युवाओं को विश्व के अन्य देशों के साथ स्पर्धा करनी है तो उनमें कौशल का विकास अनिवार्य है। 21वीं सदी टेक्नोलोजी की सदी है और टेक्नोलोजी में जो पीछे रह गये वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी पीछे रह जाएँगे। आज के युग को ग्लोबलाइझेशन का युग भी कहा जाता है। विश्व के सभी देश परस्पर जुड़ गए है- आर्थिक दृष्टि से, टेक्नोलोजी की दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से तथा राजनैतिक दृष्टि से, सभी देश एक दूसरे के साथ जुड़ गये है। इस ग्लोबलाइझेशन की प्रक्रियाने हमारे सामने कई चुनौतियाँ रखी है। अब प्रतिस्पर्धा एक जिले की दूसरे जिले के साथ नहीं है मगर प्रतिस्पर्धा एक देश के युवाओं की दूसरे देश के युवाओं के साथ है। ग्लोबलाइझेशन के इस दौर में हमारी युवापीढ़ी कही पीछे न रह जाये, इस बात पर विचार होना चाहिये।
- हमारे देश में प्राचीन समय से ही बहुत बड़े-बड़े विश्वविद्यालय थे, जहां दुनिया के अलग-अलग देशों से विद्यार्थी पढ़ने के लिये आया करते थे। प्राचीन समय में हमारे यहाँ तक्षशिला, वल्ल्भी तथा

नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे। आजकल हमारे देश के विद्यार्थी बाहर पढ़ने के लिये जाते है ऐसे समय में हमारे विश्वविद्यालयों को पहले जैसी प्रतिष्ठा अर्जित करनी होगी। इसके लिये आवश्यक है हम हमारे विश्वविद्यालयों का स्तर ऊंचा करें।

- अक्सर यह चिंता की जाती है कि दुनिया के विश्वविद्यालयों की रेंकिंग में जो प्रथम 100 विश्वविद्यालय है उनमें भारत के किसी भी विश्वविद्यालय का नाम नहीं है। इसके लिये हमारे प्राध्यापको को, कुलपतियों को तथा शिक्षा की नीति बनानेवालों को इस बात पर विचार करना होगा कि हमारे विश्वविद्यालयों की शिक्षा तथा अनुसंधान का स्तर कैसे ऊंचा हो, जिससे हमारे विश्वविद्यालय भी विश्व के विश्वविद्यालय की रेंकिंग में योग्य स्थान पा सके।
- पहले के समय में दीक्षांत समारोह जब पूरा होता था तब गुरुकुल के आचार्य विद्यार्थियों को छोटे-छोटे सूत्र बताया करते थे। वह सूत्र सुनने में तो बहुत छोटे लगते है, मगर आचरण में इतने ही मुश्किल है। आचार्य कहते थे " सत्यं वद, धर्मम चर:" जिसका मतलब होता था "सत्य बोलिये धर्म का आचरण कीजिये।" इन सूत्रों का गहण अर्थ हमे समझना चाहिये।
- गांधीजी सत्य के बहुत बड़े पुजारी थे। उनका कहना था कि सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलो। अब ये बाते इस विश्वविद्यालय से निकलते समय जब आपको बताई जाती है तो इसका तात्पर्य यह है कि आनेवाले दिवसो में आप सत्य की निष्ठा पर अडग रहेगे और सदा आचरण का पालन करते रहेंगे। धर्म का आचरण करना इसका मतलब सदाचार का आचरण करना ही है। हमारे विश्वविद्यालयों का एक काम यह भी है की हमारे यहाँ की जो स्वस्थ परंपराएं है उनको बनाये रखें और साथ-साथ में ग्लोबलाइझेशन की चुनौतियों का स्वीकार भी करे। हमारे प्राध्यापकों को इस बात का स्वीकार करना होगा और इसके अनुरूप शिक्षा विद्यार्थियों को देनी होगी। उससे हमारे युवा राष्ट्र के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का सामना कर सकेंगे।

- डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हमारे पूर्व राष्ट्रपतिजी कहा करते थे कि युवाओं को स्वप्न देखने चाहिये क्योंकि आगे बढ़ने के लिये स्वप्न देखना जरूरी है। आप बड़े स्वप्न देखे तथा उन स्वप्नों को पूरा करने के लिये अपने जीवन को ढाले।
- मुझे खुशी है कि यह विश्वविद्यालय छोटी आयु का छोटा विश्वविद्यालय है फिर भी अपनी स्थापना के बाद 14 वर्ष जैसे अल्प समय में भी इस विश्वविद्यालयने अपनी एक पहचान बनाई है। यह पहचान बनाने में यहाँ के विद्यार्थियों का, प्राध्यापकों का तथा यहाँ की एडमिनिस्ट्रेशन का योगदान है।
- आज के इस अवसर पर इस विश्वविद्यालय की प्रगति के लिये मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ और यह उम्मीद करता हूँ कि यह विश्वविद्यालय निरंतर आगे बढ़ता रहेगा और अपना एक स्थान बनायेगा। बहुत-बहुत शुभकामनाएं। बहुत-बहुत धन्यवाद।